International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979
Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 9; September 2017; Page No. 239-242

डॉ० श्याम सुन्दर दास की हिन्दी भाषा में योगदान

डॉ० अखिलेश कुमार सिंह
एम.ए. (हिन्दी), एम.एड., नेट, पी–एच.डी., रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
हिन्दी, स्वतंत्र भारत की मानित राष्ट्रभाषा है। हिन्दी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा मिला है। हिन्दी के उन्नायकों ने विदेशी भाषाओं को पीछे ढकेल हिन्दी को प्रथम स्थान दिलाया है। भारतेन्दु जी एवं श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी हिन्दी की असीम सेवा की। हिन्दी के विकास के आरंभिक वर्षों में जितने भी भाषाविद् एवं साहित्यकार हुए उनमें इन दोनों से उच्च कोई न था परन्तु बाबू श्याम दास ही एक मात्र ऐसे हिन्दी–प्रेमी थे जिनके नाम कोई भाषाकाल या साहित्यकाल नहीं फिर भी उनका स्थान हिन्दी जगत में भारतेन्दु जी एवं द्विवेदी जी के समकक्ष है।

शब्द कुन्जी : डॉ. श्याम सुन्दर दास, हिन्दी भाषा और योगदान

प्रस्तावना
"राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त जी[1] ने डॉ. श्याम सुन्दर दास के प्रति श्रद्धा अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए लिखा...

''मातृभाषा के हुये जो विगत वर्ष पचास।
नाम उनका एक ही–'श्याम सुन्दर दास'।।''

हिन्दी, हिन्दुस्तान की भाषा है। जिसे जनता का समर्थन और शासकों से उपेक्षा मिली। मुगल काल में अरबी–फारसी तो आंग्ल–काल में आंग्ल भाषा का वर्चस्व रहा। प्रत्येक वाह्य शासकों ने अपनी–अपनी भाषा का क्रियान्वयन करवाया। भारत की स्वतंत्रता के उपरांत भी हम उससे विरत् न हुए। भारतेन्दु जी ने भारतीयों को उनकी प्राचीन धरोहर हिन्दी से अवगत करवाया। लोग उनकी रचना मनोरंजन मात्र के लिए पढ़ने लगे तथा मंचन का रसास्वादन करने लगे लेकिन हिन्दी उनके दैनिक जीवन का अंग न बन सकी। डॉ0 श्याम सुन्दर दास जी का प्रादुर्भाव इसी समय हुआ। अपनी दूरदर्शिता एवं विद्वता से बाबू जी ने हिन्दी की उपयोगिता लोगों के समक्ष रखी तथा विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में हिन्दी विषय को स्थान दिलाकर हिन्दी को जीवनोपयोगी बनाया। हिन्दी के उन्नयन में जिन व्यक्तियों का नाम लिया जाता है, बाबू जी उनमें प्रथम पंक्ति के महापुरूष हैं। बाबू जी ने हिन्दी क्षेत्र में कई भागीरथ प्रयास किए जिसका उदाहरण है – नागरी प्राचरिणी सभा की स्थापना, सरस्वती पत्रिका का शुरूआत और हिन्दी का विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रम निर्धारित होना।

श्री पुरूषोत्तम दास जी टण्डन ने नागरी प्रचारिणी सभा के आदि संस्थापक डॉ0 श्याम सुन्दर दास जी के लीक पर चलते हुए ही प्रयाग नगरी में सन् 1910 ई0 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। बाबू जी ने हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए ही 'सरस्वती' पत्रिका का का सम्पादन कार्य संभाला। सरस्वती पत्रिका को उन्होंने देश के प्रबुद्ध जनों एवं सामान्य जनता के मध्य संवाद की कड़ी बनाया।

अंग्रेज सरकार ने हिन्दी के स्थान पर ऊर्दू का प्रयोग अदालतों में लागू करवाया था जबकि जनता की भाषा हिन्दी थी। अदालतों की कार्यवाही ऊर्दू में होती थी और निर्णय भी ऊर्दू में ही सुनाया जाता था। जिससे हिन्दी जानने वाले लोगों का शोषण होने लगता था और उन्हें ऊर्दू शब्दों का सही अर्थ न बताकर उसका अनर्थ किया जाता था। इस समस्या के निराकरण हेतु रायसाहब ने अदालत में हिन्दी की अनिवार्यता पर बल दिया जिससे देश की अधिकाधिक जनता लाभान्वित हो सके।

कर्मठ जीवन–शैली को धनी रायबहादुर साहब ने काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी–विभाग के प्रथम अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त किया। इस पद पर कार्य करते हुए बाबू जी ने हिन्दी के मानकीकरण एवं शुद्धिकरण पर विशेष जोर दिया। अपर्याप्त एवं दुर्लभ ग्रंथो को नव जीवन दिया तथा उसकी उपयोगिता सिद्ध करने हेतु समीक्षा–पुस्तकों की रचना कर डाली। काशी विश्वविद्यालय से सन् 1937 ई. मे सेवानिवृत्त होते समय सभागार में आयोजित अभिनन्दन समारोह में बाबू जी महत्व एवं सेवा पर जो शब्द बोले गये, वे निश्चित रूप से बाबू जी की सेवा में कम थे।
अभिनन्दन वाचन इस प्रकार था –
''हिन्दी भाषा और साहित्य के वर्तमान विकास की इस परितोषक अवस्था के साथ आपकी तपस्या, आपकी साधना, आपकी विद्वता, आपकी दक्षता और आपकी तत्परता का ऐसा अखण्ड सम्बन्ध स्थापित हो गया है कि इस युग की उत्कृष्ट साहित्य – रचना का इतिहास आपकी आपकी उद्यमशीलता का इतिहास है। आपने ग्रंथो की ही, ग्रंथकारों की भी रचना की है। आपने धूल में लौटते और चक्की में पिसते यथार्थ रत्नों को राजमुकुट में स्थान दिलाया है।"[2]

हिन्दी भाषा एवं श्यामसुन्दर दास जी के मध्य सम्भाव स्पष्ट करते हुए पं. माखन लाल चतुर्वेदी का वक्तव्य सटीक बैठता है। चतुर्वेदी जी[3] के अनुसार – 'हिन्दी वह भाषा है, जिसे संतो का आशीर्वाद मिला, जनता का समर्थन मिला और जिसे सरकारों की सदा उपेक्षा मिली। राजकाज अंग्रेजी में चलता रहा और हिन्दी को द्वितीय भाषा का स्थान दिया गया। अंग्रेजों ने जानबूझ कर ऊर्दू को बढ़ावा दिया और हिन्दी की उपेक्षा की । श्याम सुन्दर दास जी ने हिन्दी को इस नीति से निकालकर राष्ट्र गौरव बनाया । "

बाबू जी ने हिन्दी– क्षेत्र में उस समय कदम रखा जब हिन्दी का नाम लेना भी पाप के बराबर जाना जाता था। कचेहरी में इसका कोई अस्तित्व भी न था। आज कल अध्ययन के नाम पर ऐसी हिन्दी रखी गई कि वह शून्य की भांति दिखे। हिन्दी का वाचन

करने वाला 'गॅवार' की उपाधि से सुशोभित होता था। बाबूदास जी ने हिन्दी का उपयोगिता पहचानी तथा हिन्दी को गर्त से निकालकर विशाल धरातल प्रदान किया। अस्तु हिन्दी के भाषाशास्त्र की प्रारंभिक पगडंडी बनाने का श्रेय बाबू श्यामसुन्दर दास जी को ही दिया गया। बाबू जी के लेखनी से अंकित शब्दों के अस्तित्वहीन होने पर हिन्दी आज वर्तमान रूप में न मिलती।

निवर्तमान काल में बाबू श्याम सुन्दर दास जी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समकक्ष ही हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थन माने जाते हैं। उन्होंने अपने छात्र–जीवन से ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का स्वप्न देख लिया था। हिन्दी के उत्थान, विकास और प्रचार–प्रसार हेतु बाबू जी ने एक बड़े कारखाने के प्रबन्धक के रूप में कार्य निर्वहन किया।

बाबू जी ने स्वयं काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की तो वहीं हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की स्थापना के लिए प्रेरणाश्रोत भी बने। स्वयं हिन्दी पुस्तकों की रचना और दूसरों को भी प्रेरित किया। 'सरस्वती' के सफल संपादकत्व की भूमिका निवर्हित करते हुए हिन्दी सम्पादकों की नव पंक्ति तैयार की। बाबू जी यह बात भली भांति समझते थे कि किसी देश की भाषा की प्रतिष्ठा एवं सामर्थ्य विश्वजनीन स्वीकृति तभी प्राप्त करते हैं जब वह अपने भाषाई स्तर से उठकर साहित्यिक धरातल पर समासीन हो जाए। अस्तु दास जी ने हिन्दी खड़ी बोली को सर्वांग सुन्दर तथा साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध बनाने का अमोध प्रयत्न किया।

बाबू श्याम सुन्दरदास जी[4] ने 'मेरी आत्मकहानी' पुस्तक में लिखा है – 'एक भाषा ही ऐसा साधन है जिसके द्वारा सब लोग प्रेम बंधन में बंध सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि मातृभाषा के लिए हृदय में भक्ति हो। भारत वर्ष में एक भाषा की क्या आवश्यकता है, इस संबंध में कुछ कहा जा सकता है। हजार विरोध होने पर भी हिन्दी अभी जीवित है।

हिन्दी का प्रचार क्यों हो ? इस तथ्य पर उत्तर लिखते हुए दास जी ने कहा कि हिन्दी, सरल सुलभ और सुबोध है। प्रायः सभी प्रांतों के लोग थोड़े प्रयास से हिन्दी महत्व के बिना हमारी उन्नति नहीं हो सकती। हिन्दी भाषा की लिपि जैसी सुन्दर, सुवाच्य और सुस्पष्ट है वैसी किसी अन्य भाषा की नहीं है।

रायबहादुर जी के अनुसार हिन्दी हमारी राष्ट्रमाता है। नागरी प्रचारिणी सभा को वे कन्या के रूप में पूजते थे। हमारी भाषा प्राचीन है परन्तु प्राचीनता से इसके ममत्व में रंचमात्र नहीं आती।

रीवा विश्वविद्यालय[5] (म.प्र.) के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल जी ने बाबू श्याम सुन्दर दास जी को हिन्दी भाषा–विज्ञान का पुरोधा कहा है । भाषा के प्रश्न पर बाबू जी ने स्वास्थ्य का भी ध्यान नहीं रखा। उन्होंने भारतीय आर्य–भाषाओं का वैज्ञानिक दृष्टि सो विवेचना, अध्ययन तथा अनुशीलन किया। यह मौलिकता का पर्याय है। भारतीय भाषाओं की शिक्षा आधुनिक काल का आरंभिक वर्षों में साहित्य–पटल दिखाकर दिया जाता था। व्याकरण, जो भाषा का मूल होता है उसके दर्शन छात्रों को नहीं करवाया जाता था। परिणामतः अन्य भाषाओं से हिन्दी का तुलनात्मक अध्ययन दुःसह्य था। भाषा की मूल प्रकृति का ज्ञान ज्ञानार्जक को प्राप्त नहीं हो पाता था और पाठक भाषा के मूल प्रकृति से दूर हो जाता। डॉ. श्याम सुन्दर दास का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ और आपने बिहारी को मिथिला, मिथिला को बंगला तथा बंगला को उड़िया बोलियों में साम्य बनाते हुए बोलियों की मूल प्रवृत्ति स्थापित किया।

बाबू जी ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि संस्कृत भाषा के बहुत से शब्द जर्मन, फारसी, यूनानी, लेटिन, आर्मीनियन भाषाओं में भी मिलते हैं तथा हिब्रू और अरबी की बहुत सी ध्वनियॉ असीरिया और सीरिया देश की भाषाओं से मिलती जुलती है। इसी प्रकार चीन, जापान, कोरिया और मंगोलिया आदि देशों की भाषाओं में परस्पर सम्बन्ध स्थापित होता है। डॉ. श्याम सुन्दर दास ने ही भारतीय भाषाविदों को यह साक्ष्य सर्वप्रथम दिया कि शब्दों की व्युत्पत्ति एवं ध्वनियों के उच्चारण का विवेचना प्रथमतः भारत की पवित्र धरती पर ही हुआ। जिसका सबूत ब्राह्मण ग्रन्थों तथा प्रातिशाख्य में मिलता है।

ईसा से लगभग सातवीं शताब्दी पूर्व के संस्कृत आचार्य एवं विद्वान यास्क ऋषि द्वारा रचित निरूक्त ग्रन्थ भाषा–विज्ञान का प्रथम ग्रन्थ है ऐसा होना रायबहादुर साहब जी ने समर्थन किया। इस ग्रन्थ में यास्क ने शब्दों और शब्दार्थों की सार्थकता का सूक्ष्य विवेचन किया है। प्राचीन काल में 'निरूक्त' शब्द का प्रयोग 'भाषा–विज्ञान' तथा 'शब्द–शास्त्र' का उपयोग 'व्याकरण' के लिए किया जाता था। डॉ. बाबू ने इस बात को मान्यता दी कि प्राचीन भारत में व्याकरण को भाषा–शास्त्र की अपेक्षा अधिक ध्यान में रखा गया। महर्षि द्वारा बताये गए अर्थ परिवर्तन की तीन दशाओं के विपरीत डॉ0 श्याम सुन्दर जी ने अर्थ परिवर्तन की छः दशाओं का उल्लेख किया है।

भाषा विज्ञान के क्षेत्र में आधुनिक काल में कार्यारम्भ पाश्चात्य देशों में हुआ। चार्ल्स, विलियम जोंस तथा विल्सन के अतिरिक्त अन्य विदेशी भाषाविदों ने सर्वप्रथम संस्कृत का अध्ययन किया और फिर उसका तुलनात्मक अध्ययन कर भाषा–सिद्धांतों का विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस तथ्य को डॉ0 दास का समर्थन प्राप्त था। डॉ0 दास ने इस बात को सहर्ष स्वीकार किया कि उन्होंने मैक्समूलर, ग्रियर्सन, हार्नली, ब्लूमफील्ड आदि विद्वानों की पुस्तकों तथा लेखों से अनेक सामग्री ली है। बाबू जी ने अपनी पुस्तकों में स्थान–स्थान पर आवश्यकतानुसार बातों को दोहराने में कभी संकोच नहीं किया। वे विषय को यथा संभव सरल बनाते थे। जिससे पाठकों का मन पुस्तक पढ़ने में ही लगा रहे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा जी का सहयोग भी दास जी को सर्वदा प्राप्त होता रहा। डॉ0 दास के विचार एवं मानसिकता की छाया इन दोनों पर स्पष्ट मिलती है।

डॉ0 श्याम सुन्दर दास का हिन्दी भाषा के क्षेत्र में ऐसा नाम है जिसने आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चंद्र एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी के समय कदम से कदम मिलाकर हिन्दी की सेवा की। डॉ. दास अपने समकालीन भाषाविदों के प्रेरणाश्रोत बने रहे । गांधी जी एवं उनकी विचारधारा से प्रभावित बाबू जी ने संस्कृतनिष्ठ एवं भावुकतापूर्ण शैली में हिन्दी भाषा की गरिमा को दोबाला किया। वहीं साथ ही हिन्दी भाषा में प्रसाद और औज का संयोजन कर भाषा में प्रावहमयता एवम् सजीवता का संचार किया। डॉ0 महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा आचार्य पूर्ण सिह ने सहयोग से डॉ0 श्याम सुन्दर दास जी ने हिन्दी भाषा का बहुमुखी विकास करते हुए भाषा को प्रांजल, समीक्षात्मक एवम् विद्वतापूर्ण स्तर पर पहुँचा दिया।

हिन्दी भाषा के क्षेत्र में बाबू जी ने विभिन्न विधाओं में रचनाऍ की हैं। बाबू जी द्वारा सन् 1930 ई. में रची गई 'हिन्दी भाषा और साहित्य' नामक हिन्दी भाषा को समर्पित पुस्तक, वर्तमान हिन्दी प्रेमियों को रोशनी की किरण दिखाती है तथा हिन्दी विकास के संदर्भ में उत्पन्न विवादों एवम् प्रश्नों के समाधान का साधन है। हिन्दी भाषा का विकास और पूर्णता उस भाषा के शब्द–भण्डार पर निर्भर होता है। आधुनिक काल में जब हिन्दी विकासोन्मुख हुआ उस समय हिन्दी शब्दावली में कमी महसूस की गई। विद्यालयों में आंग्ल भाषा की शिक्षा पर जोर होने से भारतीय परम्परा के गुरूकुलों के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडराने के साथ ही हिन्दी को भी सॉस लेने में मुश्किल आने लगी। उस वक्त बाबू दास ने हिन्दी शब्द – सागर (सन् 1929 ई.) पुस्तक की रचना कर

डाली। जिसने हिन्दी को पुर्नजागृत करने हेतु नवीन शब्द भण्डार की जन्म घुट्टी पिलाई। भाषा–विद्वान के क्षेत्र में बाबू जी की रचना 'हिन्दी भाषा का विकास' अतुल्य है। बाबू जी ने हिन्दी भाषा की उत्पत्ति से लेकर शब्द–रचना, शब्द–भेद, हिन्दी ध्वनि एवं अर्थ–परिवर्तन आदि अनेक उपविषय पर शोध कर अपने शब्दों से हिन्दी को नवीन रूप देने का सफल प्रयत्न किया।

हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी लिपि में दिखलाई देने वाली त्रुटियों तथा अनियमितताओं को दूर करने के लिए बाबू जी ने कई प्रयास किए हालांकि देवनागरी लिपि में सुधार करने की ओर सर्वप्रथम अहिन्दी भाषी एवं मराठी मूल के महादेव गोविन्द रानाडे ने प्रयास किया । डॉ. दास ड., ञ पंचमाक्षर की जगह अनुस्वार का प्रयोग करने के पक्षधर थे, जैसे अड़क के स्थान पर अंक तथा मञ्च के स्थान पर मंच आदि।

संवत् 1973 को प्रयाग में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन के षष्ठम् अधिवेशन में बाबू जी ने कहा –

''हम लोगों का यह परम् कर्तव्य है कि हम प्रतिवर्ष किसी न किसी स्थान में एकत्रित होकर मातृभाषा हिन्दी और गुण–आगरी नागरी के संबंध में अपने आवश्यक कर्तव्यों पर विचार करें और भरसक उनके निर्वाह के नए–नए मार्ग निश्चित करें और निश्चित मार्गों को सुगम और परिष्कृत करें, सोचकर उनके सफलीभूत करने में अग्रसर हों।''[6]

बाबू दास जी का सोचना था कि इस प्रकार के अधिवेशनों से हिन्दी की चर्चा किसी न किसी रूप में विद्वानों के मध्य होती रहेगी और नये–नये विचारों, अनुसंधानों आदि के फलस्वरूप हिन्दी का परिष्करण भी होता रहेगा। इस कार्य में कुछ विदेशी एवं अहिन्दी भाषी विद्वानों का भी स्वागत होना चाहिए। जिससे हिन्दी उनके समाज में भी पथ–निर्माण कर सकेगी। हिन्दी भाषा के महत्व को स्वीकार न करना देश और भाषा का दुर्भाग्य कहलाएगा।

शब्दों का जाल बुनकर अपनी विशिष्ट भाषण–शैली से दास बाबू श्रोताओं का बांध दिया करते थे। बाबू जी ने जीव–उत्पत्ति पर प्रकाश डाला। जीव–उत्पत्ति पर चर्चा आपने राष्ट्रभाषा के सम्मान में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा आयोजित अधिवेशन में किया। बाबू जी[7] के शब्दों में –''ईश्वर की सृष्टि विचित्रताओं से भरी हुई है। कहॉ एक बिन्दुमात्र पदार्थ और कहॉ उससे उत्पन्न मनुष्य। पहले मनुष्य असभ्य थे, जंगली अवस्था में थे। असभ्यता से सभ्यता की ओर मनुष्य, मस्तिष्क के विकास के साथ साहित्य के विकास को अंगीकार करके सभ्य बना।''

बाबू जी का मानना था कि समस्त भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही ऐसी है जो मातृभूमि की सेवा के लिए सर्वथा उपयुक्त है और जिससे सबसे अधिक लाभ की आशा की जा सकती है। गुजराती, मराठी, बंगला आदि भाषाओं का आधुनिक साहित्य हमारी हिन्दी के वर्तमान साहित्य से कई अंशों से भरा–पूरा है, पर उनके प्राचीन साहित्य की तुलना हिन्दी के पुराने साहित्य भंडार में नहीं हो सकती इस कारण उन्हें परम्परा की प्राचीनता का गौरव प्राप्त नहीं है। अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी को बाबू जी ने किसी प्रांत और स्थान से परे रखा है क्योंकि हिन्दी– भाषी–जन भारत के प्रत्येक प्रांत में निवास करते है और अहिन्दी भाषी भी येन–केन प्रकारेन अपने मनोगत भाव को प्रकाशित कर लेते हैं। हिन्दी भाषा राष्ट्रीयता का प्रतीक है और अन्य भाषाओं की अपेक्षा अपनी मातामही जननी 'संस्कृत' के अत्यंत करीब है । राष्ट्र–निर्माण में हिन्दी भाषा की भूमिका अमूल्य तथा वांछनीय सिद्ध होगी।

मुद्राओं तथा नोटों पर देवनागरी भाषा टंकित न करने की शासन की नीति ने राय साहब को अत्यंत आहत किया था। भारतीय मुद्रा पर विदेशी शासकों का चित्र एवं विदेशी लिपि भारत को पूर्णतः अपनी संस्कृति से दूर करती है। बाबू जी ने कभी भी विदेशी भाषाओं का विरोध नहीं किया और न ही उन्हें प्रथम भाषा के रूप में स्वीकार किया। जापान का श्रेष्ठ उदाहरण देकर बाबू जी ने बताया था कि जापान ने अपनी उन्नति विदेशी भाषा की सीढ़ी पर चढ़कर नहीं किया। भारत में ऐसा क्यों नहीं होता ? उच्च शिक्षा के अभिलाषी विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा का चुनाव करने की सलाह देने वाले बाबू जी का समर्थन बाल–मन पर मातृभाषा के प्रभाव की पूर्ण स्वीकृति थी। अभी हाल में एक राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र दैनिक भास्कर के जबलपुर संस्करण के रसरंग पृष्ठ पर रविवार 25 जुलाई 2010 ई0 को एक लेख छपा जिसमें कैलाश मड़बैया ने लिखा कि मई 2010 ई0 के अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन जो कि जापान में आयोजित की गई थी, में मैंने अनुभव किया कि जापानियों को अंग्रेजी का मोह बिल्कुल नहीं है। उन्हें जितना जापानियत पर गर्व है, उतना शायद हम भारतीयों को भारतीयता पर न हो। जापान में हिन्दी अध्यापन के पूरे सौ वर्ष हो गये हैं और जापान के तीन विश्वविद्यालयों में वैकल्पिक विषय के रूप में हिन्दी पढ़ाई जाती है। जिसमें उत्तीर्ण होना अनिवार्य नहीं हैं। मड़बैया जी ने उस समय स्वयं को शर्मिन्दित महसूस किया जब वे एक सम्मेलन में मौजूद भारतीय प्रतिनिधि आपस में हिंग्लिस में बात कर रहे थे और वहीं द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई करने वाले जापानी बनारसी पंडा के समान विशुद्ध हिन्दी में अपना भाषण दे रहे थे।[8]

जुलाई 2010 ई0 में सिंगापुर के शिक्षामंत्री एन0 ई0 हेन ने हिन्दी केन्द्र दिवस पर देशवासियों को हिन्दी भाषा सीखने को जरूरी करार किया । बाबू जी की दूरदर्शिता इस संदर्भ मे कई वर्षों के पूर्व सिद्ध हो चुकी है। फिर भी भारतीय सरकार इस मुद्दे पर अपने कान बंद किए हुए हैं।

प्रसिद्ध हिन्दी भाषाविद् श्री लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय जी ने बाबू श्याम सुंदर दास जी की हिन्दी भाषा सिद्धांत एवं निरूपण की विशेषताओं के विषय में लिखा है – ''बाबू श्याम सुन्दर दास की भाषा सिद्धांत–निरूपण करने वाली सीधी, ठोस, भावुकता विहीन और निरलंकृत होती है। विषय–प्रतिपादन की दृष्टि से वे संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हैं और जहॉ तक बन पड़ा है, उन्होंने विदेशी शब्दों का प्रयोग नहीं किया। कहीं–कहीं पर बाबू जी की भाषा दुरूह और अस्पष्ट भी हो जाती है। उनकी भाषा में लोकोक्तियों का प्रयोग भी कम हुआ है। वास्तव में उनकी भाषा का महत्व उपयोगिता की दृष्टि से है और उसमें साहित्यिक गुरूता है। प्रारंभ में उनकी भाषा में शिथिलता थी, किन्तु धीरे–धीरे वह प्रौढ़, स्वच्छ, परिमार्जित और संयत रूप में हमारे सामने आती है। उनकी शैली को हम आलोचना – शैली कह सकते हैं। वस्तुतः उनकी शैली एक अध्यापक की शैली है।''

अध्यापकीय शैली के अन्वेषण रायबहादुर दास जी ने कभी भी विदेशी शब्दों का संक्रमण हिन्दी में होना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपने शब्द–भंडार में विदेशी शब्दों का समावेश किया परन्तु पूर्ण विशुद्धिकरण एवं त्रुटिरहित प्रक्रियाओं से गुजारने के बाद उनके वक्तव्य दूसरों को कांटे की तरह लगती थी। जिसका कारण यह था कि वे असत्यता से दूर ही रहते थे और सत्य बातें तो सभी को चुभती भी हैं और निरलंकृत भी होती है। प्रारंभ में बाबू जी की रचनाधर्मिता में भाषा का सरलता स्वाभाविक रूप से मिलती है। धीरे–धीरे पाण्डित्य हासिल करते–करते उनमें शब्दों की क्लिष्टा आती गई और उनकी भाषा लोगों के लिए दुरूह साबित हुई लेकिन उसे निरर्थक सिद्ध कर पाना असम्भव है।

डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक जी[9] ने ''डॉ0 श्याम सुन्दर दास की साहित्य–साधना'' शीर्षक में यह विश्वास व्यक्त किया कि यदि स्वतंत्र भारत में बाबू श्याम सुन्दर दास बीस वर्ष भी जीवित रह पाते तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सम्मानपूर्ण स्थान अवश्य मिल जाता

और हिन्दी के सामर्थ्य के विषय में व्यर्थ की जो शंकाएँ उठाई जाती है, उनका रचनात्मक प्रक्रिया से बाबू जी समाधान प्रस्तुत करने में समर्थ होते। बाबू श्याम सुन्दर दास का पचास–पचपन वर्ष का जीवन भाषा की शक्ति–सामर्थ्य के सम्बर्द्धन के लिए समर्पित जीवन है। ऐसा व्यक्तित्व ही किसी भी भाषा के लिए गौरव का विषय हो सकता है।''

सन्दर्भ

1. हिन्दी भाषा के उन्नायक : बाबू श्यामसुन्दर दास, लेखक– श्री रामेश्वर दयाल दुबे (सम्मेलन पत्रिका श्यामसुन्दर दास जन्मशती विशेषांक), पृ062, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
2. राष्ट्रभाषा हिन्दी और हिन्दी साहित्य सम्मेलन : बाबू श्यामसुन्दर दास, (सम्मेलन पत्रिका श्यामसुन्दर दास जन्मशती विशेषांक), पृ0 5, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
3. हिन्दी भाषा के उन्नायक : बाबू श्यामसुन्दर दास, लेखक– श्री रामेश्वर दयाल दुबे (सम्मेलन पत्रिका श्यामसुन्दर दास जन्मशती विशेषांक), पृ062, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
4. हिन्दी साहित्य सम्मेलन शीर्षक में प्रकाशित श्याम सुन्दर दास की आत्म कथा "मेरी आत्म कहानी" (सम्मेलन पत्रिका श्यामसुन्दर दास जन्मशती विशेषांक), पृ02, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
5. भाषा– विज्ञान का पुरोधा – बाबू श्यामसुन्दर दास : लेखक डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल (सम्मेलन पत्रिका श्यामसुन्दर दास जन्मशती विशेषांक), पृ061, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
6. राष्ट्रभाषा हिन्दी और हिन्दी साहित्य सम्मेलन लेखक : डॉ. श्यामसुन्दर दास (सम्मेलन पत्रिका श्यामसुन्दर दास जन्मशती विशेषांक), पृ03, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
7. राष्ट्रभाषा हिन्दी और हिन्दी साहित्य सम्मेलन लेखक : डॉ. श्यामसुन्दर दास (सम्मेलन पत्रिका श्यामसुन्दर दास जन्मशती विशेषांक), पृ07, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
8. राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र दैनिक भास्कर (जबलपुर संस्करण (रसरंग) रविवार 25 जुलाई 2010 ई0 ।
9. ''डॉ0 श्याम सुन्दर दास की साहित्य–साधना'' लेखक - डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक जी (सम्मेलन पत्रिका श्यामसुन्दर दास जन्मशती विशेषांक), पृ055, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।